प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 12 * AUG 2007 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Voice – 41	32				भ०गीता०-अ०१३ : क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ दो ही पदार्थ हैं	
2	Voice – 42	46				भ०गीता०-अ०१३ : प्रकृति/माया/जागृत स्वप्न सुषुप्ति क्षेत्र है और चौथा मैं ही क्षेत्रज्ञ हूँ	Imp
3	Voice – 43	30				भ०नारायण का चतुर्भुज रूप में प्रथम जीव ब्रह्मा को ज्ञान का उपदेश	Imp
4	Voice – 44	42				भ०गीता०-अ०७ : मुझ अधिष्ठान पुरुष में चेतन/परा व जड़/अपरा प्रकृति अध्यास रूप है	Imp
5	Voice – 45	32				श्रीमद्भागवत् कथा : रस और रास लीला राधा बुद्धि एवं गोपियाँ मन इन्द्रियाँ और विषय	
6	Voice – 46	*39*				पुरुष और प्रकृति दो ही पदार्थ हैं, पुरुष ब्रह्म है और प्रकृति माया है सामान्य एवं विशेष ज्ञान	विशेष
7	Voice – 47	33				मेरी माया जगत की महत योनि है और मैं जगत का बीजप्रद पिता हूँ	
8	Voice – 48	30				भ० नारायण का चतुर्भुज रूप में प्रथम जीव ब्रह्मा जी को ज्ञान का उपदेश	
9	Voice – 49	42				नाम की महिमा, ओंकार भगवान का सर्वश्रेष्ठ नाम है - ओंकार का स्वरूप निरूपण, निनि०+ससा० का वाचक	
10	Voice – 50	41				नर शरीर अत्यन्त दुर्लभ है देह-देही दो ही पदार्थ हैं, देह माया व देही को मेरा स्वरूप जानो	
11	Voice – 51	*31*				सीताराम जगत के माता-पिता हैं : रामायण के ३ अर्थ चेतना का क्रम	
12	Voice – 52	*46*				पुरुष व प्रकृति दो ही पदार्थ हैं पुरुष द्रष्टा ब्रह्म है और जा०स्व०सु०/प्रकृति दृश्य माया है	विशेष
13	Voice – 53	38				अ०रा०-प्र०सर्ग-राम हृदय : अज्ञान रावण है और दस इन्द्रियाँ उसके दस मुख हैं	
14	Voice – 54	*35*				प्रकृति-पुरुष दो ही पदार्थ हैं,क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ निरूपण द्वारा जड़-चेतन विभाग आत्म स्व० निरूपण ६:३८	विशेष
15	Voice – 55	34				सीताजी द्वारा भ०राम का नि०नि०स्व०निरूपण राम-सीता : जल-तरंग का दृष्टान्त	
16	Voice – 56	43				श्रेयस + प्रेयस सुख भ०गीता०:२/११-२० देह विनाशी व देही अविनाशी-मेरा ही स्वरूप है	
17	Voice – 57	39				भ०गीता०-अ०२/१६ सत्-असत् भेद प्रकृति जड़ व आत्मा चेतन अकर्म और असंग है	1
18	Voice – 58	33				सीताजी द्वारा भ०राम का नि०नि०स्व०निरूपण दृश्य मेरा स्वरूप है व द्रष्टा राम हैं	
19	Voice – 59	40				अर्जुन सत्-असत् दो ही पदार्थ हैं आत्मा सत् यानि मैं हूँ, जगत असत् जड़ अध्यास रूप है	
20	Voice – 60	36				अ०रा०-प्र०सर्ग-राम हृदय, भ०राम का हनुमान को ज्ञानोपदेश चिदाभास की ७ अवस्थाऐं	विशेष
21	Voice – 61	34			Hi	अर्जुन सत्-असत् दो ही पदार्थ हैं ब्रह्म के स्वरूप एवं तटस्थ लक्षण	विशेष
22	Voice – 62	28				माण्डूक्य० उ० : भूमिका व शान्ति मंत्र का अर्थ	a
23	Voice – 63	37				भ०गीता०-अ०२/१६-१८ सत्-असत् दो ही पदार्थ हैं आत्मा सत् व जा०स्व०सु० माया है	2
24	Voice – 64	31			im	माण्डूक्य उ० - ← आत्मा के चार चरणों का निरूपण → Imp	b
25	Voice – 65	37				भ०गीता०-अ०२/१७, १८,१९	3
26	Voice – 66	29				माण्डूक्य उ०	c
27	Voice – 67	43				भ०गीता०-अ०२/१८-३०	4
28	Voice – 68	28				माण्डूक्य उ० ← रामोत्तरतापनी + गोपालोत्तरतापनी उपनिषद → Imp ← आत्मा की परिभाषा →	d
29	Voice – 69	18				भ०गीता०-अ०२/२४, २५	5
30	Voice – 70	30				रामायण - शिव पार्वती सम्वाद : संत असंत दोनों का कल्याण प्रभु को इष्ट है	
31	Voice – 71	*42*				भ०गीता०-अ०२/२६, २७, २८	
32	Voice – 72	40				अद्भुत रामायण - सहस्त्र मुख रावण की कथा	
33	Voice – 73	*31*				भ०गीता०-अ०२/२८, २९, ३०	6
34	Voice – 74	29				सीताजी द्वारा राम का नि०नि०स्व०निरूपण निद्रा माया रूपी मेघ व जा०स्व० बरसात है	
35	Voice – 75	*39*				भ०गीता०-अ०२/३०	7
36	Voice – 76	32				छा०उ०-सातवाँ अ० नारद - सनत कुमार सम्वाद	
37	Voice – 77	40				कर्म - १ → विशेष कर्म	1
38	Voice – 78	30				छा०उ०-सातवाँ अ० नारद - सनत कुमार सम्वाद	
39	Voice – 79	43				कर्म - २ → सामान्य कर्म	2